Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

(भाग–1)

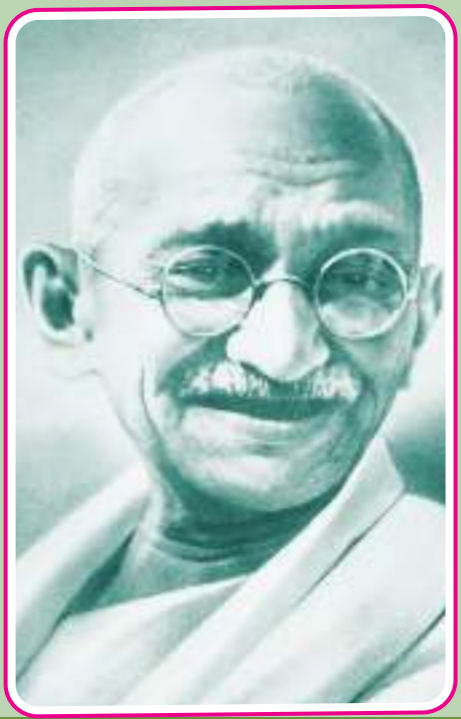

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPPM20

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

(भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**नीतिशास्त्र : एक परिचय**	**5–12**
1.1	नीतिशास्त्र	5
1.2	मानव मूल्य	9
2.	**मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा**	**13–40**
2.1	लोक प्रशासन में नैतिक सद्गुण एवं मूल्य	13
2.2	प्रशासन में नैतिक तत्त्व	16
2.3	नैतिक तर्क एवं नैतिक दुविधा	20
2.4	नैतिक मार्गदर्शन के रूप में अंतरात्मा	24
2.5	लोक सेवकों हेतु आचरण संहिता	27
2.6	शासन में उच्च मूल्यों का पालन	31
2.7	अभिप्रेरणा	33
3.	**दार्शनिक/विचारक, सामाजिक कार्यकर्त्ता/सुधारक**	**41–96**
3.1	सुकरात	41
3.2	प्लेटो	42
3.3	अरस्तु	45
3.4	महावीर स्वामी	48
3.5	गौतम बुद्ध	53
3.6	आचार्य शंकर (आदि शंकराचार्य)	57
3.7	चार्वाक दर्शन के नैतिक विचार	64
3.8	कबीर	68
3.9	तुलसीदास	70
3.10	रवींद्रनाथ टैगोर	73

3.11 राजा राममोहन राय 75

3.12 सावित्रीबाई फुले 78

3.13 स्वामी दयानंद सरस्वती 79

3.14 स्वामी विवेकानंद 82

3.15 श्री अरविंदो 85

3.16 डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 88

3.17 गुरु नानक 90

3.18 मौलाना अबुल कलाम आज़ाद 92

4. मनोवृत्ति **97–119**

4.1 मनोवृत्ति क्या है? 97

4.2 मनोवृत्ति का निर्माण 100

4.3 मनोवृत्ति के प्रकार्य 103

4.4 मनोवृत्ति परिवर्तन 106

4.5 प्रबोधक संप्रेषण 109

4.6 पूर्वाग्रह एवं विभेद 112

4.7 भारतीय संदर्भ में रूढ़िवादिता 117

5. व्यक्तिगत भिन्नताएँ **120–127**

5.1 व्यक्तिगत भिन्नता : अर्थ 120

5.2 व्यक्तिगत भिन्नता : परिभाषा 120

5.3 व्यक्तिगत भिन्नता के कारण 121

5.4 व्यक्तिगत विभिन्नता का महत्त्व 126

अध्याय
1

नीतिशास्त्र : एक परिचय
(Ethics: An Introduction)

नैतिकता अनिवार्य रूप से एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य समाज का हित होता है। नैतिकता की यह मांग है कि व्यक्ति अपने निजी हित के स्थान पर समाज के कल्याण को अधिक महत्त्व दे परंतु यह एक ऐच्छिक कार्यविधि है जिसकी अपेक्षा तो समाज करता है परंतु क्रियान्वयन व्यक्ति विशेष के स्वविवेक पर निर्भर होता है। दार्शनिकों के अनुसार नीतिशास्त्र 'आचरण का विज्ञान' है। ऐसे मूल्य, जो हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि कैसे हमें व्यवहार करना चाहिये, 'नैतिक मूल्यों' की श्रेणी में आते हैं, जैसे– ईमानदारी, निष्पक्षता आदि। इसलिये एक विश्वसनीय काम के माहौल को बढ़ावा देने के लिये नीतिशास्त्र का प्रशिक्षण अत्यधिक आवश्यक है। नैतिकता सदैव समाज सापेक्ष होती हैं। समाज में तो नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है और समाज के लोगों की अंतर्क्रिया के फलस्वरूप ही इसका विकास होता है। समय के साथ-साथ समाज की व्यवस्थाओं में परिवर्तन आने पर प्राय: नैतिक प्रगति या अवनति देखी गई है। इसलिये नीतिशास्त्र का महत्त्व एवं प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

1.1 नीतिशास्त्र *(Ethics)*

- नीतिशास्त्र एक मानवीय, सामाजिक, सैद्धांतिक व व्यवहारपरक विज्ञान है, जिसके अंतर्गत समाज में रहने वाले सामान्य मनुष्यों के आचरण का मूल्यांकन अथवा अध्ययन किया जाता है।
- नीतिशास्त्र का अध्ययन 'विषय विशेष के रूप में' तथा समाज में नैतिक व्यवस्था के रूप में किया जाता है।

एथिक्स और मोरैलिटी

- नैतिकता के लिये अंग्रेज़ी में दो शब्द प्रचलित हैं– 'एथिक्स' और 'मोरैलिटी'।
- एथिक्स एक ग्रीक शब्द 'एथिकोस' (Ethicos) से बना है, जिसकी उत्पत्ति 'इथोस' (Ethos) से हुई है। इथोस का उस समय अर्थ था रीति-रिवाज़, हालाँकि आजकल इसका अर्थ 'आंतरिक विशेषता' के संदर्भ में लिया जाता है।
- इसी प्रकार मोरैलिटी शब्द का निर्माण लैटिन भाषा के शब्द 'मूर्स' (mores) से हुआ है, जिसका अर्थ है– रीति-रिवाज़।
- इन दोनों में कोई तात्त्विक अंतर नहीं है। सामान्य जीवन में प्राय: मोरैलिटी शब्द का प्रयोग किया जाता है जबकि अध्ययन के क्षेत्र में एथिक्स का।

विषय विशेष के रूप में नीतिशास्त्र *(Ethics as a special subject)*

विषय विशेष के रूप में पढ़ते समय नीतिशास्त्र को एक विज्ञान के तौर पर देखा जाता है जिसके अंतर्गत उसका व्यवस्थित अवलोकन, उसकी विषय-वस्तु और कुछ मूलभूत सिद्धांतों या नियमों की खोज की जाती है। उदाहरण के तौर पर–उपरोक्त प्रथम बिंदु में नीतिशास्त्र को एक मानवीय, सामाजिक, सैद्धांतिक व व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है तथा समाज में रहने वाले मनुष्य, उनका आचरण तथा उस आचरण का अध्ययन ही इस विज्ञान की विषय-वस्तु है। विषय-वस्तु के चारों बिंदु निम्नलिखित हैं–

- **समाज में रहने वाले** से तात्पर्य समाज-सापेक्ष धारणा से है अर्थात् 'एथिक्स' अकेले व्यक्ति पर लागू नहीं होता, यहाँ समग्र समाज का अध्ययन किया जाता है।
- **सामान्य मनुष्य** के अंतर्गत पशु-पक्षियों, सात वर्ष तक के बच्चों, मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों के साथ ऐसे लोगों की गणना नहीं की जाएगी जो किसी विशेष अवस्था (जैसे– नशे या अर्द्धबेहोशी) में हों। सामान्य शब्दों में इन सभी के अतिरिक्त जो भी लोग हैं, वे सामान्य मनुष्य हैं जिन पर 'एथिक्स' की बात लागू होती है।
- **आचरण** मानवीय क्रियाकलाप का एक प्रकार है जिसे 'नैतिक कर्म' भी कहा जाता है। मानवीय क्रियाकलाप का दूसरा प्रकार 'नीतिशून्य कर्म' है। व्यक्ति नैतिक या अनैतिक केवल उन कर्मों के संदर्भ में माना जाता है जिनका निर्णय करने

- विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा, नैतिक शिक्षा का प्रभाव पड़ना। उदाहरण के लिये– इतिहास के पाठ्यक्रम यदि गांधीजी का अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना या सत्य, अहिंसा का पाठ प्राथमिक और उच्च शिक्षण संस्थान में पढ़ाया जाए तो इसका प्रभाव मूल्य विकास में निश्चित तौर पर सहायक होगा।
- इसी प्रकार अध्यापक और छात्र समूह का भी मूल्यों के विकास में अहम योगदान होता है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अंत:प्रज्ञावाद का अर्थ है कि कुछ निश्चित नैतिक नियम हैं, जो व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा से पता चलते हैं, इसलिये मनुष्य को उसी के अनुसार कर्म करना चाहिये।
- स्वार्थवादी विचारधारा के समर्थक सिरिनाइक संप्रदाय के विचारक एरिस्टिपस, एपीकुरस आदि थे।
- स्वार्थवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूल प्रकृति में स्वार्थी होता है और उसे प्रत्येक निर्णय इसी आधार पर करना चाहिये कि उसका अधिकतम स्वार्थ किसमें है?
- सुखवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सुखाकांक्षी होता है इसलिये उसे वही विकल्प चाहिये जिससे उसे अधिकतम सुख की प्राप्ति हो।
- उपयोगितावाद अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की बात करता है।
- दर्शनशास्त्र के तीन प्रमुख अंग माने जाते हैं– ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा तथा नीतिशास्त्र।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 10-20 शब्दों/एक-दो पंक्तियों में दीजिये)

1. नीतिशास्त्र को परिभाषित कीजिये।
2. आधुनिक विचारधाराओं के आधार पर नीतिशास्त्र के प्रकार बताइये।
3. मानव मूल्य क्या है?

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 50 शब्दों या 5 से 6 पंक्तियों में दीजिये)

1. मानकीय नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं?
2. पर्यावरण नैतिकता को परिभाषित कीजिये।
3. लैंगिक नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 150/200 शब्दों में दीजिये)

1. शाखाओं के आधार पर नीतिशास्त्र को समझाइये।
2. पर्यावरण नैतिकता पर टिप्पणी कीजिये।
3. नैतिक व्यवस्था के रूप में नीतिशास्त्र किस प्रकार सहायक है?
4. नैतिक मूल्यों का निर्धारण कैसे होता है? समझाइये।
5. मानव मूल्य क्या है? विशेषताएँ एवं मूल्यों के प्रकार को समझाइये।
6. मूल्यों के विकास में परिवार, समाज एवं शिक्षण संस्थानों की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा (Human Necessity and Motivation)

लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिये अभिप्रेरित प्रशासन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभिप्रेरणा के द्वारा मानव व्यवहार को संगठन के लक्ष्य की दिशा में कार्य करने के लिये आंतरिक तथा बाह्यरूप से प्रेरित किया जा सकता है। लोक कल्याणकारी राज्य में सिविल सेवकों के बढ़ते उत्तरदायित्व एवं जवाबदेहिता के कारण लोक सेवकों के लिये यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि वह नैतिक मूल्यों एवं प्रशासनिक मूल्यों में टकराव न होने दें एवं अपने व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं कर्त्तव्यों के बीच नैतिक दुविधा जैसी परिस्थिति उत्पन्न न होने दें। भारतीय प्रशासन एक वृहद संगठन है जो संवैधानिक और संविधानेत्तर कतिपय मूल्यों को आधारभूत मूल्यों के रूप में स्वीकार करता है। अब्राहम मैस्लो ने मानवीय आवश्यकताओं के संबंध में आवश्यकता सोपान सिद्धांत के माध्यम से संगठन में कार्य करने वाले कार्मिकों को उनकी ज़रूरतों के अनुसार वर्गीकृत किया है जिनमें अभिप्रेरणा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। लोक प्रशासन में नैतिक मूल्यों और अभिप्रेरणा की आवश्यकता सदैव बनी रहती है।

2.1 लोक प्रशासन में नैतिक सद्‌गुण एवं मूल्य *(Ethics and Values in Public Administration)*

लोक प्रशासन का तात्पर्य लोक कल्याण की दृष्टि से सार्वजनिक या लोक सेवाओं का प्रबंधन करना है। लोक कल्याण का कार्य प्रशासकों द्वारा किया जाता है। राज्य की प्रकृति में बदलाव के साथ ही लोक प्रशासन के कार्य की प्रकृति व क्षेत्र में भी परिवर्तन आए हैं। साथ ही प्रशासकीय अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होने लगी है। इन अधिकारों पर कानून एवं नैतिक मार्गदर्शन की कमी के कारण प्रशासकों के कार्यों में जटिलताएँ बढ़ने लगी हैं। इसके परिणामस्वरूप नियमों के प्रति विमुखता, अकार्यकुशलता, ईमानदारी व सत्यनिष्ठा की कमी देखने को मिली है। यही कारण है कि लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र एवं मूल्यों की उपयोगिता व आवश्यकताओं पर विचार किया जाने लगा है।

राज्य की प्रकृति में परिवर्तन से लोक प्रशासन से अपेक्षाएँ *Expectations from public administration by the change in the state's nature)*

- राज्य के निर्माण से ही उसकी प्रकृति में परिवर्तन होता रहा है जैसे-जैसे राज्य की प्रकृति और गतिविधियों का विस्तार होता गया है, वैसे-वैसे लोक प्रशासन का महत्त्व बढ़ता गया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हम प्रशासन की गोद में पैदा होते हैं, पलते हैं, बड़े होते हैं, मित्रता करते हैं एवं टकराते हैं और मर जाते हैं।
- वर्तमान समय में राज्य के प्रकार्यों में वृद्धि ने सरकार की भूमिकाओं में व्यापक परिवर्तन किया है जिसके अंतर्गत सरकार विधि-व्यवस्था, आंतरिक सुरक्षा, बाहरी आक्रमण से सुरक्षा के कार्यों के साथ जनता की विभिन्न आकांक्षाएँ भी पूर्ण करती हैं।
- सरकार जैसे– जैसे अपने विकास के साथ नवीन कार्यों व दायित्व को संभालती है, प्रशासन को भी उसी अनुरूप प्रभावी प्रक्रियाएँ करनी होती हैं। यह वास्तव में लोक सेवा के समुचित एवं विवेकी संगठन से ही संभव है क्योंकि सक्षम व प्रभावी लोक सेवा के अभाव में प्रशासन पूर्णतः विघटित हो जाएगा।
- स्पष्ट है कि यह आवश्यकता लोक कार्मिकों में निष्ठा, प्रतिभा, कर्मनिष्ठा, सामर्थ्य, कार्य के प्रति समर्पण भावना आदि की मांग करती है जिन्हें लोक प्रशासन में सदाचार एवं नैतिक मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

लोक प्रशासन में नैतिक सद्‌गुणों एवं मूल्यों की आवश्यकता

लोक प्रशासन में नैतिक सद्‌गुणों एवं मूल्यों की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण हैं-

- राजनीतिक नेतृत्व में गिरावट।
- भ्रष्टाचार।
- भाई-भतीजावाद।
- समाज में व्याप्त असमानता।
- वैश्विक मानकों के अनुपालन की आवश्यकता।

अध्याय
3

दार्शनिक/विचारक, सामाजिक कार्यकर्त्ता/सुधारक (Philosopher/Thinker, Social Worker/ Reformer)

3.1 सुकरात *(Socrates)*

पश्चिमी सभ्यता के विकास में सुकरात की एक अहम भूमिका रही है। सुकरात एक महान यूनानी दार्शनिक थे। इन्हें पश्चिमी दर्शन का जनक भी कहा जाता है। सुकरात का जन्म पूर्वी एथेंस में 469 ईस्वी में एक मूर्तिकार के घर हुआ। आरंभिक दिनों में सुकरात ने भी अपने पैतृक व्यवसाय को ही अपनाया तथा अन्य लोगों की तरह मातृभाषा, यूनानी कविता, ज्यामिति, खगोल विज्ञान तथा गणित की पढ़ाई की। कालांतर में जब सुकरात का मन मूर्तिकला में नहीं लगा तो इन्होंने एक स्कूल खोल दिया जहाँ युवा अपने मन में उपजे सवालों को हल हेतु सुकरात के पास आते थे। सुकरात का जीवनकाल भारी राजनीतिक उथल-पुथल का दौर था। सुकरात ने उनके समक्ष जाने वाले आडंम्बरों, रूढ़ियों और राजनेताओं की आलोचना करते थे। जिस कारण समाज में उनके अनेक शत्रु बन गए। इसी के कारण लोगों ने इन्हें देशद्रोही भी कह दिया तथा युवाओं को गुमराह करने के आरोप में जेल में डाल दिया गया।

बुद्ध की भाँति सुकरात ने भी कोई ग्रंथ नहीं लिखा। सुकरात के जीवनदर्शन का अनुमान उनके आचरण से ही पता चलता है, किंतु उसकी व्याख्या विभिन्न लेखक भिन्न-भिन्न प्रकार से करते हैं। ज्ञान का संग्रह तथा प्रसार सुकरात के जीवन के प्रमुख लक्ष्य थे। आगे सुकरात के अधूरे कार्य को उसके शिष्य अफलातून (प्लेटो) तथा अरस्तु के पूर्ण किया। सुकरात के दर्शन को मुख्यत: दो भागों में बाँटा जा सकता है, पहला- गुरू-शिष्य-यथार्थवाद और दूसरा-अरस्तू का प्रयोगवाद। युवाओं को बिगाड़ने, देवनिंदा तथा नास्तिक होने के आरोपों में उन्हें जहर देकर मारने का दंड दे दिया गया।

सुकरात के नैतिक विचार *(Ethical thoughs of Socrates)*

सुकरात का मूल उद्देश्य ऐसे सार्वभौमिक नैतिक विचार की स्थापना करना था, जो विभिन्न व्यक्तियों या देशकाल की परिस्थितियों से प्रभावित न हों। वे सोफिस्टों द्वारा प्रचारित आत्मनिष्ठतावादी व सापेक्षवादी नैतिक विचार से असंतुष्ट थे, क्योंकि उसके बल पर किसी भी कार्य को नैतिक या अनैतिक ठहराया जा सकता था। सुकरात अपने बुद्धिवादी तेवर के अनुरूप नैतिक विचार में भी अनिवार्यता और निश्चयात्मकता की खोज कर रहे थे।

सुकरात ने सद्गुणों को नैतिकता का प्रतिमान माना है। सद्गुण वे गुण हैं, जो कठोर अभ्यास से विकसित होते हैं और व्यक्ति के भीतर यह क्षमता पैदा करते हैं कि वह अपनी वासनाओं और इच्छाओं को अपने विवेक के अधीन रख सकें। उदाहरण के लिये, साहस सद्गुण का अर्थ है- भय की भावना को नियंत्रित करने का स्थायी गुण, जो बार-बार ऐसी परिस्थितियों में किये गए अभ्यास से विकसित होता है।

सुकरात ने ज्ञान को प्रमुख सद्गुण माना है, किंतु ज्ञान का अर्थ सिर्फ जानना या जानकारी रखना नहीं है। ज्ञान का वास्तविक अर्थ है- शुभ-अशुभ, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय तथा कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य में भेद कर पाने की क्षमता। ज्ञान सद्गुण तब बनता है, जब वह चेतना का हिस्सा न रहकर अंतरीकृत हो जाता है और प्रत्येक आचरण में व्यक्त होने लगता है। सभी नैतिक बुराइयाँ अज्ञान से ही पैदा होती हैं, क्योंकि ऐसे व्यक्ति शुभ-अशुभ में भेद करना नहीं जानते। समाज को नैतिक बनाने का एक ही रास्ता है और वह यह कि कठोर अभ्यास द्वारा व्यक्तियों में ज्ञान सद्गुण का विकास किया जाए।

विभिन्न सद्गुणों के संबंध को स्पष्ट करने के लिये सुकरात ने सद्गुणों की एकता का सिद्धांत (Principle of Unity of Virtues) प्रस्तुत किया। इसके अनुसार ज्ञान एकमात्र सद्गुण है और शेष सद्गुण साहस, संयम, विवेक, न्याय आदि इसी के विशिष्ट रूप हैं।

सुकरात ने सुख और आनंद में स्पष्ट भेद नहीं किया है पर उनके कथनों से प्रतीत होता है कि वे शारीरिक सुख की तुलना में मानसिक व बौद्धिक आनंद को प्राथमिकता देते हैं। सद्गुणों के विकास का प्रयोजन इस आनंद की उपलब्धि करना ही है।

अध्याय
4

मनोवृत्ति (Attitude)

व्यक्ति की मनोवृत्ति उसका व्यक्तित्व निर्माण करने के साथ-साथ समाज में उसके कार्य-व्यवहार को संचालित करती है। मनोवृत्ति समाज से प्रभावित होती है और उसे प्रभावित भी करती है। सामान्यत: किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष में सकारात्मक या नकारात्मक भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं। आमतौर पर मनोवृत्तियाँ व्यक्तिगत अनुभव एवं समाज के साथ अंतर्क्रिया द्वारा सीखी जाती है। चूँकि मनोवृत्ति सापेक्षत: स्थायी होती है तथा इसमें प्रेरित करने की शक्ति भी होती है इसी विशेषता के कारण मनोवृत्ति का महत्त्व सिविल सेवकों के लिये बहुत अधिक हो जाता है। सिविल सेवकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी मनोवृत्ति, पूर्वाग्रहों एवं रूढ़ियुक्ति से मुक्त रहते हुए अपने कार्य दायित्वों का निर्वहन करें। मनोवृत्ति के कारण हमारा दृष्टिकोण तटस्थ और वस्तुनिष्ठ नहीं रह पाता है जबकि सिविल सेवकों के लिये यह जरूरी है कि उनका दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ तथा तटस्थ हो।

4.1 मनोवृत्ति क्या है? *(What is Attitude?)*

मनोवृत्ति का सामान्य अर्थ किसी मनोवैज्ञानिक विषय (Psychological Object) (अर्थात् व्यक्ति, वस्तु, समूह, विचार, स्थिति या कुछ और जिसके बारे में भाव आ सके) के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भाव की उपस्थिति है। उदाहरण के लिये, वर्तमान भारत में पश्चिमी संस्कृति और ज्ञान के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति है, जबकि पारंपरिक तथा रूढ़िवादी मान्यताओं के प्रति आमतौर पर नकारात्मक मनोवृत्ति दिखाई पड़ती है।

मनोवृत्ति की परिभाषा में समय के साथ परिवर्तन आया है। शुरुआती परिभाषाओं में इसके केवल एक पक्ष पर बल दिया जाता था जिसे मूल्यांकन परक पक्ष (Evaluative) या भावनात्मक (Affective) पक्ष कहा जा सकता है। 1946 में थर्सटन ने इसकी परिभाषा देते हुए कहा कि किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष या विपक्ष में सकारात्मक या नकारात्मक भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं।

कालांतर में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर बल दिया कि मनोवृत्ति में सिर्फ भावनात्मक पक्ष नहीं होता बल्कि संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive aspect) भी होता है अर्थात् एक जानकारी या विश्वास की उपस्थिति भी होती है। उदाहरण के लिये अगर कोई पुरुष कहता है कि महिलाएँ अतार्किक होती हैं तो इसमें महिलाओं में तर्क बुद्धि कम होने का विश्वास अंतर्निहित है और साथ ही उनके प्रति नकारात्मक भावना भी शामिल है। 1980-90 के बाद मनोवृत्ति की परिभाषा और व्यापक हो गई। इन परिभाषाओं में निहित दृष्टिकोण को ABC दृष्टिकोण कहा जाता है। यहाँ A का अर्थ Affective या भावनात्मक है; B का अर्थ Behavioural अर्थात् व्यवहारात्मक जबकि C का अर्थ Cognitive या संज्ञानात्मक है। इसे हिन्दी में 'संभाव्य' (संज्ञानात्मक, भावात्मक, व्यवहारात्मक) कहते हैं। इस दृष्टिकोण के समर्थक मानते हैं कि मनोवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति इन तीन संघटकों की अपेक्षाकृत स्थायी मानसिकता है। उदाहरण के लिये- यदि कोई श्वेत-अश्वेतों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखता है तो उसमें तीन पक्ष होंगे:

(i) उसके पास कुछ ऐसी जानकारियाँ होंगी जिनसे साबित होता हो कि अश्वेत बुरे होते हैं, ये जानकारियाँ गलत हो सकती हैं किंतु उसे विश्वास होगा कि ये सही हैं (संज्ञानात्मक पक्ष)।

(ii) वह अश्वेतों के प्रति नफरत या घृणा जैसी भावनाएँ अनुभव करेगा (भावनात्मक पक्ष)।

(iii) वह किसी अश्वेत को देखकर नकारात्मक प्रतिक्रिया करेगा, जैसे– उससे दूर बैठना, हाथ न मिलाना या गालियाँ देना आदि (व्यवहारात्मक पक्ष)।

सामान्यत: माना जाता है कि मनोवृत्ति इन तीनों पक्षों से मिलकर बनती है। हालाँकि, समकालीन अनुसंधानों के अनुसार मनोवृत्ति में व्यवहारात्मक पक्ष का उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या समूह के बारे में गलत धारणाएँ रखता हो (संज्ञानात्मक), बुरी भावनाएँ भी रखता हो (भावनात्मक) किंतु नैतिक मूल्यों या सामाजिक दबावों अथवा लड़ाई-झगड़े के भय से अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप आचरण न करे। जैसे– अफ्रीका में घूमते समय कोई श्वेत व्यक्ति अश्वेतों के प्रति वैसा आचरण नहीं करेगा जैसा अपने देश में कर सकता है।

अध्याय
5

व्यक्तिगत भिन्नताएँ (Individual Differences)

व्यक्तिगत/वैयक्तिक भिन्नता प्रकृति का स्वाभाविक गुण हैं। सामान्य रूप से सभी व्यक्ति एक सामान दिखते है किन्तु उनका सूक्ष्म अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उनमें परस्पर अंतर अवश्य है। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। इनमें ऊंचाई भार तथा परिपक्वता के अंतर देखे जा सकते हैं। एक की माता-पिता की संतानों में भी भिन्नता होती है। व्यक्तिगत भिन्नता का आधार वंशानुक्रम तथा वातावरण से प्राप्त गुण है। सर्वप्रथम 19 वीं शताब्दी में सर फ्रांसिस गाल्टन का ध्यान वंशानुक्रम का अध्ययन करते समय इस ओर गया। इसके बाद 20 वीं शताब्दीं में इसका अध्ययन पियर्सन, कैटेल तथा टारमैन आदि मनोवैज्ञानिकों ने किया। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में इन अध्ययनों के आधार पर व्यक्तिगत विभिन्नता को जानकर शिक्षाशस्त्रियों ने शिक्षा की योजना एवं प्रणालियों का निर्माण किया।

5.1 व्यक्तिगत भिन्नता : अर्थ *(Individual Differences : Meaning)*

किन्हीं भी दो व्यक्तियों के व्यक्तित्व और क्रियाओं में जो अंतर होता है। उसे ही हम वैयक्तिक भिन्नता कहते है। इसके अंर्तगत व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, तथा सामाजिक विशेषाताओं पर ध्यान दिया जाता है एवं इन्हीं विशेषताओं के आधार पर एक विशेष व्यक्ति होता है।

परस्पर एक रूप होते हुए भी एक-दूसरे से शारीरिक व व्यावहारिक रूप से व्यक्तिगत भिन्नता होने स्वाभाविक है। इसके मूल में ही 'व्यक्तित्व' की विविधता निहित है। बल्कि यह कहना भी असगंत न होगा कि प्रत्येक व्यक्ति में अनेक व्यक्तित्व समाहित हैं। फलतः व्यक्ति के स्वभाव में पल-पल परिवर्तन दृष्टिगोचर होता रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। सभी का बौद्धिक स्तर, रूचियाँ, अभिवृत्ति, योग्यताएँ, आकांक्षाएँ एवं आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। व्यक्ति इसी के अनुरूप अनुक्रिया व व्यवहार करता है तथा इसी के आधार पर उसका विकास भी होता है। व्यक्तित्व में भिन्नता का प्रमुख कारण यह है कि-व्यक्तित्व में लक्षणों (Traits) का एक भिन्न सयुंक्तीकरण होता है। लक्षणों के भिन्न-भिन्न सयुंक्तीकरण के कारण ही भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का व्यक्तित्व भी भिन्न-भिन्न होता है। लक्षणों के समान ही आत्म-प्रत्यय (Self-Concept) भी व्यक्तित्व की भिन्नता का महत्त्वपूर्ण कारक है।

वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन प्राचीन काल से ही किया जाता रहा है और भिन्नतापरक व्यवहार का कारण इसे माना जाता रहा है। प्लेटो (Plato) ने अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' (Republic) में वैयक्तिक भिन्नताओं के सदंर्भ में उल्लेख किया है। मनोविज्ञान में वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन महत्त्वपूर्ण रहा है। वैयक्तिक भिन्नताओं की अवधारणा पर अध्ययन सर्वप्रथम गाल्टन (F. Galton, 1879) ने प्रारंभ किया, इनके यह अध्ययन वैज्ञानिक आधार पर किए गए थे। इस अवधारणा पर अध्ययन के निष्कर्ष को गाल्टन ने अपने विचारों में इस आधार पर प्रकट किया-'व्यक्तिगत भिन्नता एक परिणामात्मक तथ्य (रूप) है जो एक सातत्य के नियम के अनुसार वितरित होती है।'

इनके उपरांत इस दिशा में वैज्ञानिक अध्ययन कार्य जे. एम. कौटिल (J.M. Cattel, 1890-99) ने किए। 'कौटिल' न संवेदना व स्मृति में वैयक्तिक भिन्नताओं के प्रभाव को प्राप्त किया। इसी दिशा में बिने (Binit, 1904) का योगदान भी अत्यन्त सराहनीय है, जिन्हानें बुद्धि परीक्षण का निर्माण करके वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन किया।

5.2 व्यक्तिगत भिन्नताएँ : परिभाषा *(Definition Individual : Differences)*

- **जी. डब्ल्यू आलपार्टेर्ट (G.W. Allport, 1961) के अनुसार**- वे कहते हैं कि किन्हीं दो व्यक्तियों के लक्षण सूक्ष्म रूप से समान नहीं होते हैं। जैसे दो व्यक्ति आक्रामक हो सकते हैं, लेकिन दोनों ही व्यक्तियों की आक्रामकता की शैली और आक्रामकता का विस्तार निश्चित रूप से अलग होगा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596